कानपुर महानगर के अस्थि विकलांग व सामान्य विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 ओमपाल सिंह

एसो0 प्रोफे0, शिक्षा शास्त्र विभाग, डी0ए0वी0 कालेज, कानपुर

इमेल - ompalsingh711@gmail.com

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य अस्थि विकलांग विद्यार्थियों एवं सामान्य विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना है। इसमें 50 अस्थि विकलांग विद्यार्थी व 50 सामान्य विद्यार्थी लिये गये हैं। इन सभी का संवेगात्मक समायोजन, सामाजिक समायोजन तथा शैक्षिक समायोजन का अध्ययन किया गया है। तदोपरान्त सम्पूर्ण समायोजन देखा गया तथा पाया कि सामान्य विद्यार्थियों का सम्पूर्ण समायोजन अस्थि विकलांग विद्यार्थियों की अपेक्षा अच्छा होता है।

मुख्य शब्द – *अस्थि विकलांग विद्यार्थी, सामान्य विद्यार्थी, संवेगात्मक समायोजन, सामाजिक समायोजन, शैक्षिक समायोजन।*

प्रस्तावना

शारीरिक रूप से विकलांग विद्यार्थियों की विकलांगता कोई अभिशाप नहीं है बल्कि यह एक प्राकृतिक एवं दुर्घटनाओं के कारण हो जाती है। मनुष्य निःसन्देह प्रकृति की सर्वोत्तम रचना है। शिक्षा वह माध्यम है जो बच्चों में वांछित परिमार्जन करके उसे जीवन के उच्चतम स्थान तक पहुँचाती है। सुकरात ने अपनी शिक्षा सम्बन्धी परिभाषा में कहा था कि ''स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का वास ही शिक्षा है।'' अर्थात् जब शरीर स्वस्थ रहेगा तभी मनुष्य अच्छी एवं उपयोगी शिक्षा के द्वारा अपने जीवन में विकास कर सकेगा। जब मनुष्य की सभी ज्ञानेन्द्रियाँ एवं कर्मेन्द्रियाँ उचित रूप से कार्य करेंगी तभी उसका शरीर स्वस्थ रहेगा परन्तु कुछ मनुष्योंकी इन इन्द्रियों में बाधा उत्पन्न हो जाती हैं और वह अपने कार्य को सुगमता के साथ नहीं कर पाते हैं तो ऐसे लोगों को विकलांग व्यक्ति की संज्ञा दी जाती है। विकलांगता को दो भागों में बाँटा जा सकता है। शारीरिक विकलांगता एवं मानसिक विकलांगता।

शारीरिक विकलांगता में दृष्टि, मूक, अस्थि आदि में दोष उत्पन्न हो जाता है एवं मानसिक विकलांगता में व्यक्ति मानसिक क्रिया में पूर्णता या आंशिक दोष उत्पन्न हो जाता है अर्थात् बुद्धि में कमी उत्पन्न हो जाती है। जिस भी व्यक्ति के शरीर में दोष उत्पन्न हो जाता है वह व्यक्ति अपने सामान्य दिनचर्या में बाधा का अनुभव करता है। इन्हीं बाधाओं को दूर करने के लिये शिक्षा की जरूरत होती है। अतः विकलांग व्यक्ति की विकलांगता को दृष्टिगत रखते हुए उन्हें इस प्रकार की शिक्षा दी जाती है। जिससे वे अपनी क्षमता का विकास करके समाज

की मुख्य धारा से जुड़ने का प्रयास करते हैं और देश के विकास में अपनी भूमिका का निर्वहन करने का भी प्रयास करते हैं। इसीलिये सरकार विकलांग व्यक्तियों के लिये उचित शिक्षा का प्रबन्ध करती है और उन्हें सशक्त बनाकर देश के विकास का मार्ग प्रशस्त करती है।

वर्तमान समय में विश्व के प्रत्येक देश में विकलांग व्यक्तियों की संख्या पायी जाती है जिसमें कुछ व्यक्ति जन्म से ही विकलांग होते हैं तो कुछ व्यक्ति किसी दुर्घटना का शिकार होकर विकलांग हो जाते हैं। एक अनुमान के मुताबिक पूरे विश्व में लगभग 500 मिलियन लोग विकलांग हैं। यह विकलांगता की समस्या विकासशील देशों में अधिक भयावह है। संयुक्त राष्ट्र संघ ने 1983–92 को अन्तर्राष्ट्रीय विकलांग दशक घोषित करने के साथ साथ वर्ष 1981 को अन्तर्राष्ट्रीय विकलांग वर्ष घोषित किया। विश्व विकलांग दिवस प्रतिवर्ष 19 मार्च को मनाया जाता है।

भारत में विकलांगता की समस्या बहुत व्यापक रूप में है। सम्पूर्ण विश्व की विकलांग जनसंख्या में भारत का हिस्सा लगभग 10 प्रतिशत है। भारत में सबसे अधिक गतिशील विकलांगों की संख्या है। आज का समाज प्रगतिवादी समाज है जो अपने लोगों के विकास के लिये सदैव प्रयत्नशील रहता है। वर्तमान समय में विकलांगता के प्रति लोगों में अधिक जागरूकता आयी है। आज विश्व के अधिकांश देश अपने विकलांग व्यक्तियों के स्वास्थ्य, शिक्षा, मनोरंजन, रोजगार एवं अन्य भौतिक सुख सुविधाओं का प्रबन्ध कराने के लिये सदैव तत्पर हैं। आज अनेक समाजसेवी एवं स्वैच्छिक संगठन विकलांगों को उनका अधिकार दिलाने के लिये लगातार संघर्षरत् हैं। सरकार द्वारा भी इनके लिये अनेक सरकारी कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं जिससे भारत में विकलांगों के जीवन में आशातीत परिवर्तन दिखाई देने लगे हैं।

अस्थि विकलांग बच्चों से तात्पर्य ऐसे बालकों से है जिनकी हड्डियाँ, जोड़ एवं मांसपेसियां सुचारू रूप से कार्य नहीं कर पाते हैं। ऐसे बच्चों को सामान्यतया शारीरिक विकलांग, अपंग या चलन निःशक्त बालक भी कहा जाता है।

अस्थि विकलांग बालक उन बालकों को कहा जाता है जिनकी एक या अधिक अस्थियों में दोष आ गया हो जिससे वह उन सामान्य बालकों की मांसपेशियों तथा जोड़ों अथवा अस्थियों में किसी कारणवश दोष आ जाता है। वैधानिक तौर पर वैसे बालकों को अस्थि विकलांग कहा जाता है जो गम्भीर रूप से अस्थि विकलांग है और विकलांगता उनके शैक्षिक प्रदर्शन को गम्भीर रूप से प्रकाशित करती है।

अस्थि विकलांगता किसी भी बच्चे की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है और यह एक स्वाभाविक तथ्य है क्योंकि शैक्षिक उपलब्धि के लिये बच्चे का शारीरिक रूप से सक्षम होना आवश्यक होता है। विभिन्न अनुसंधानों से यह प्रमाणित भी होती है कि अस्थि विकलांगता के कारण बच्चे की बुद्धि क्षमता पर प्रभाव डालती है फिर भी इनमें उपलब्धि अर्जित करने की क्षमताआवश्यक रूप से पायी जाती है। यदि अस्थि विकलांग विद्यार्थियों को विभिन्न तकनीकों एवं उपयुक्त शिक्षण विधियों से अधिगम कराया जाये तो यही बच्चे अपने शैक्षिक जीवन में उच्च शैक्षिक उपलब्धि प्रदर्शित करते हैं। अस्थि विकलांग बालकों में शारीरिक दोष के कारण मनोवैज्ञानिक समस्या उत्पन्न हो जाती है जिससे समायोजन की समस्या, मनोस्नायु विकृति

हीनता की भावना, अवसादग्रस्ता आदि है। अस्थि विकलांग बच्चों की सबसे प्रमुख समस्या अपने परिस्थितियों के साथ उचित समायोजन है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। प्राचीन काल से ही मानव स्वभाव को उसके उचित समायोजन के लिये जाना जाता है। कई शताब्दी पूर्व में अरस्तू महोदय ने कहा था कि ''एक व्यक्ति जो समाज में अन्य व्यक्तियों के साथ नहीं रहता वह या तो देवता या पशु।'' अन्य शब्दों में यदि यह कहा जाये कि मानव की समाज में अलग रहकर जीवन व्यतीत करने की कल्पना नहीं की जा सकती है। क्योंकि व्यक्ति का जीवन उसकी समृद्धि तथा प्रगति समाज में ही सम्भव है। समाज किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व के उद्‌गम स्रोत है। कोई भी व्यक्ति जब जन्म लेता है तो वह धीरे धीरे समाज के सम्पर्क में आता है और समाज के मध्य रहकर उसके साथ अन्तक्रिया करता है। व्यक्ति अपनी सभी जरूरतों की पूर्ति के लिये अपने समाज पर आश्रित रहता है। इसीलिये व्यक्ति को हर समय समाज तथा वातावरण से समायोजन करने के लिये संघर्ष करना पड़ता है।

किसी भी व्यक्ति के लिये सुसमायोजन उसके सफलता और आनन्द की कुंजी होती है। इसीलिये मानव जीवन का सबसे मूल लक्ष्य सुसमायोजन स्थापित करना है और इसीलिये वह निरन्तर प्रयास भी करता रहता है। समाज में कुछ व्यक्ति अपने समायोजन की जरूरत को पूर्ण करने में असफल और असमर्थ होते हैं जिसके फलस्वरूप ऐसे व्यक्तियों में अनुशासनहीनता उत्पन्न होती है तथा कुण्ठा उग्रता, असन्तोष एवं अराजगता की भावना उत्पन्न हो जाती है और यही समस्या आगे चलकर किसी भी व्यक्ति के लिये कुसमायोजन का प्रतीक बन जाती है। मानव के व्यक्तित्व के सामान्य विकास के लिये समायोजन परम आवश्यक है।

प्रतिकूल मनोवैज्ञानिक परिस्थितियों में स्वयं का अनुकूलन ही समाजोजन कहलाता है।

स्किनर महोदय ने समायोजन को इस प्रकार दर्शाया है :–

''समायोजन के शीर्षक के अन्तर्गत हमारा अभिप्रायः इन बातों से है– सामूहिक क्रियाकलापों में स्वस्थ्य तथा उत्साहमय ढंग से भाग लेना, समय पड़ने पर नेतृत्व का भार उठाने की क्षमता तक उत्तरदायित्व वहन करना तथा सबसे बढ़कर समायोजन में अपने को किसी प्रकार से धोखा देने की प्रवृत्ति से बचना है।''

गेट्स व अन्य

''समायोजन निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपने और वातावरण के बीच संतुलित सम्बन्ध रखने के लिये अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है।''

स्मिथ के अनुसार

''अच्छा समायोजन वह है जो यथार्थ पर आधारित तथा संतोष देने वाला होता है। यह कुण्ठा, तनाव तथा दुश्चिंता को जहां तक सम्भव है कम करता है।''

सामान्यता समायोजन की पूर्ण प्रक्रिया में तीन मूलतत्व पाये जाते हैं– प्रेरणा, कुण्ठित करने वाली परिस्थितियाँ तथा विधिक क्रियायँ।

1. समायोजन की प्रक्रिया किसी मूल आवश्यकता या प्रेरण से आरम्भ होती है।

2. यदि वातावरण की परिस्थितियाँ आवश्यकताओं की संतुष्टि से बाधक बनती है तो व्यक्ति इन बाधाओं को अपने प्रयास द्वारा दूर करने का पूरा प्रयास करता है। इस प्रकार इसी क्रिया से समायोजन की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है। कुण्ठित करने वाली परिस्थितियों के उत्पन्न होने पर व्यक्ति प्रतिक्रिया स्वरूप अनेक प्रकार की वांछित क्रियाएँ करता है। व्यक्ति के द्वारा की जाने वाली ये अनुक्रियाएँ सामान्य भी हो सकती है तथा असामान्य भी। इन्हीं अनुक्रियाओं के परिणामस्वरूप व्यक्ति का वातावरण से समायोजन हो जाता है।

अस्थि विकलांग विद्यार्थियों के समक्ष सबसे अधिक समस्या समायोजन की होती है। चूँकि अस्थि विकलांग बालकों में चलने फिरने या क्रिया करने में बाधा होती हैं इसीलिये ऐसे बालक अपने विचारों, संवेगों के आदान प्रदान में कठिनाई महसूस करते हैं। ये बच्चे सामान्य बच्चों के साथ रहना, पढ़ना, खेलना चाहते हैं परन्तु उनका सहयोग न मिल पाने के कारण ये अपनी इच्छाओं का दमन करते हैं। इसीलिये अस्थि विकलांग बच्चों में तनाव एवं कुण्ठा उत्पन्न होता है तथा इस प्रकार ये बच्चे अवांछित व्यवहार करने वाले तथा अपराधी हो जाते हैं। इस प्रकार के बच्चों के मित्र भी कम होते हैं। घर के व्यक्ति भी इनके साथ असहयोग पूर्ण व्यवहार करते हैं तो इनका तनाव और सामाजिक कुसमायोजन का स्तर बढ़ जाता है।

विद्यालय में भी ये बच्चे कुसमायोजन का शिकार हो जाते हैं। ये अपनी शैक्षिक समस्याओं से अपने शिक्षकों को अवगत नहीं करा पाते हैं तथा साथ ही इन्हें पढाने के लिये भी अलग अलग शिक्षण विधि का प्रयोग करना पड़ता है। अस्थि विकलांग बच्चो के समक्ष भविष्य में अनेक प्रकार की बाधायें उत्पन्न हो जाती हैं जिसमें उनके मुख्य रूप से जीविकोपार्जन के लिये व्यवसाय की समस्या प्रमुख है। इन्हें सुगमता से कहीं भी रोजगार भी नहीं मिल पाता है। अतः इन्हीं परिस्थितियों के कारण अस्थि विकलांग व्यक्ति का वातावरण से समायोजन में अवरोध उत्पन्न होता है।

किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास के लिये सुसमायोजन एक आवश्यक शर्त है। हमारे शोध अध्ययन के उद्देश्य अस्थि विकलांग एवं सामान्य विद्यार्थियों के समायोजन पर आधारित है। अतः हमें इस अध्ययन से यह देखना है कि अस्थि विकलांग विद्यार्थियों तथा सामान्य विद्यार्थियों के विभिन्न क्षेत्रों के समायोजन में भिन्नता है अथवा नहीं। प्रस्तुत शोध पत्र इसी में एक प्रयास है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

व्यक्ति के व्यक्तित्व के समुचित विकास के लिये समायोजन सबसे आवश्यक अंग है। एक सुसमायोजित व्यक्ति ही अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकता है। अधिकांशतः यह देखा गया है कि जो बच्चे विशेष आवश्यकता वाले होते हैं वे जरूर कुसमायोजन का शिकार होते हैं और यदि इनकी इन मौलिक समस्याओं पर आवश्यक ध्यान न दिया जाये तो यह और भी कुसमायोजन का शिकार होते जाते हैं और परिणामस्वरूप इस प्रकार के बच्चे कक्षा में पिछड जाते हैं या इनकी पढ़ाई बीच में ही छूट जाती है। इसीलिये अस्थि विकलांग के

समायोजन पर अध्ययन की आवश्यकता महसूस की गयी।

शोध की परिकल्पना

शोधार्थी द्वारा चयनित समस्या ''कानपुर महानगर के अस्थि विकलांग एवं सामान्य विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन'' के लिये परिकल्पना इस प्रकार है :–

1. अस्थि विकलांग तथा सामान्य विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. अस्थि विकलांग तथा सामान्य विद्यार्थी के संवेगात्मक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. अस्थि विकलांग तथा सामान्य विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. अस्थि विकलांग तथा सामान्य विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

समस्या का परिसीमांकन

1. वर्तमान शोध कानपुर शहर के विद्यालयों तक सीमित रखा गया है।
2. अध्ययन केवल अस्थि विकलांग एवं सामान्य विद्यार्थियों तक सीमित रखा गया है।
3. अध्ययन केवल कक्षा 9, 10, 11 व 12 के विद्यार्थियों तक सीमित रखा गया है।
4. 100 विद्यार्थियों को शोध में शामिल किया गया है। 50 सामान्य विद्यार्थी, 50 अस्थि विकलांग विद्यार्थी।
5. अध्ययन को केवल तीन क्षेत्रों तक ही सीमित रखा गया है।
   (क) संवेगात्मक (ख) सामाजिक (ग) शैक्षिक

तालिका– अस्थि विकलांग विद्यार्थी एवं सामान्य विद्यार्थी के प्राप्त प्राप्तांक

	संवेगात्मक समायोजन		सामाजिक समायोजन		शैक्षिक समायोजन		सम्पूर्ण समायोजन	
	अस्थि विकलांग विद्यार्थी	सामान्य विद्यार्थी	अस्थि विकलांग विद्यार्थी	सामान्य विद्यार्थी	अस्थि विकलांग विद्यार्थी	सामान्य विद्यार्थी	अस्थि विकलांग विद्यार्थी	सामान्य विद्यार्थी
औसत प्राप्तांक	20	16	24	19	22	15	66	50
Z प्राप्तांक	+0.60	−0.08	+0.97	+0.23	+0.53	−0.41	+0.70	−0.09

शोध अध्ययन का निष्कर्ष

उपर्युक्त तालिका में सामान्य तथा अस्थि विकलांग विद्यार्थियों के सम्बन्ध में विद्यार्थियों के समायोजन का आँकड़ा प्रस्तुत किया गया है। अस्थि विकलांग विद्यार्थियों के समायोजन से सम्बन्धित आयाम संवेगात्मक समायोनज का औसत प्राप्तांक 20 तथा Z प्राप्तांक +0.60 हैं। वहीं सामान्य विद्यार्थियों के सम्बन्ध में संवेगात्मक समायोजन का औसत प्राप्तांक 16 तथा Z प्राप्तांक

–0.08 हैं। तालिका को देखने से स्पष्ट है कि संवेगात्मक समायोजन के सम्बन्ध में सामान्य विद्यार्थियों में औसत स्तर का समायोजन पाया गया वहीं अस्थि विकलांग विद्यार्थियों में संवेगात्मक समायोजन का स्तर औसत समायोजन से निम्न पाया गया है। यह कहा जा सकता है कि सामान्य विद्यार्थियों की अपेक्षा अस्थि विकलांग विद्यार्थियों में सामाजिक समायोजन कम हो पाता है।

अस्थि विकलांग विद्यार्थियों के समायोजन से सम्बन्धित आयाम शैक्षिक समायोजन का औसत प्राप्तांक 22 तथा Z प्राप्तांक +0.53 हैं जबकि सामान्य विद्यार्थियों का औसत प्राप्तांक 15 तथा Z प्राप्तांक –0.41 हैं है। इस प्रकार से स्पष्ट है कि शैक्षिक समायोजन के सम्बन्ध में सामान्य विद्यार्थियों में औसत स्तर का समायोजन पाया गया जबकि अस्थि विकलांग विद्यार्थियों में शैक्षिक समायोजन का स्तर औसत समायोजन स्तर से निम्न पाया गया। अतः यह कहा जा सकता है कि अस्थि विकलांग विद्यार्थियों का शैक्षिक समायोजन भी सामान्य विद्यार्थियों की अपेक्षा कम होता है।

अस्थि विकलांग विद्यार्थियों के पूर्ण समायोजन आयाम का औसत प्राप्तांक 66 तथा Z प्राप्तांक +0.70 है जबकि सामान्य विद्यार्थियों का पूर्ण समायोजन का औसत प्राप्तांक 50 तथा Z प्राप्तांक –0.09 है। इससे स्पष्ट है कि पूर्ण समायोजन के सम्बन्ध में सामान्य विद्यार्थियों में औसत स्तर का समायोजन पाया गया जबकि अस्थि विकलांग विद्यार्थियों में पूर्ण समायोजन का स्तर औसत समायोजन स्तर से निम्न पाया गया।

इस प्रकार से स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि सामान्य विद्यार्थियों का सम्पूर्ण समायोजन अस्थि विकलांग विद्यार्थियों की अपेक्षा अच्छा होता है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. इरफान, ए0 एण्ड मोहम्मद ए0एस0 (2010) *सेल्फ कान्सेप्ट एण्ड सोशल एडजेस्टमेन्ट एमंग फिजिकली हैण्डीकैप्ड पर्सन,* यूरोपियन जर्नल्स ऑफ सोशल साइन्स वा 15
2. गैरेट, हेनरी ई0, *स्टेटिक्स इन साइकोलाजी एण्ड एजूकेशन*
3. धई व सेन (1985), *भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका,* भारतीय शिक्षा शोध संस्थान, नई दिल्ली।
4. प्रधान, राजश्री (1993), *सेल्फ कान्सेप्ट एण्ड एडजेस्टमेन्ट ऑफ हैण्डीकैप्ड चिल्ड्रेन इन इन्टीग्रेटेड एण्ड सेगरेगेटेड सेटिंग्स,* पी–एच0डी0 शिक्षाशास्त्र, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय।
5. बाला (1985), *भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका,* भारतीय शिक्षा शोध संस्थान, नई दिल्ली।
6. भार्गव, महेश (2001) *आधुनिक मनोवैज्ञानिक मापन,* 13वाँ संस्करण, भार्गव बुक हाउस, भार्गव भवन, आगरा।